व्यंग्य

ये आई-लू क्या है?

-रविशंकर श्रीवास्तव

अभी हाल ही में खबर आई थी कि विश्व की एक प्रसिद्ध कम्प्यूटर साफ्टवेयर कंपनी इंटरनेट सुविधा युक्त शौचालय-स्नानागार यानी 'आई-लू' (इंटरनेट इनेबल्ड लू) बनाने जा रही है. हालाकि कंपनी ने तत्परता से इस बात का खंडन किया कि ऐसी कोई योजना उनके पास विचाराधीन नहीं है, परंतु यह खबर कइयों के मन में आशा का संचार कर गई. अब अगर कहीं सचमुच में ऐसी सुविधा हम-आपको मिले तो कल्पना करें कि क्या होगा?

आज के वक्त में जब आदमी के पास करने को बहुत कुछ है और समय कम है तो इस विचार का आदर करना ही चाहिए. अब तो हालात यह हैं कि आदमी को ट्रू-मल्टीटास्किंग यानी वास्तविकता में एक ही समय में बहुत सारे कामों को करना सीखना होगा. हममें से बहुतों के सुबह के नित्यकर्म की शुरूआत चाय की एक प्याली के उपरांत या सुबह के अखबार के साथ होता है. अब संभवतः यह परंपरा सुबह अखबार के आनलाइन संस्करण के वाचन या फिर ई-मेल आदान-प्रदान या आनलाइन चैट के साथ-साथ ही होगी. अब इस बात का टेंशन खत्म हो जाएगा कि सुबह आज का अखबार आया नहीं तो प्रेशर कैसे आएगा? अब यह जुदा बात है कि कभी आपका आईएसपी सर्वर

या आपका आई-लू का कम्प्यूटर सुबह बैठ गया तो फिर क्या होगा? इस बात की भी संभावना है कि कोई ई-मेल संदेश पढ़ कर आपका आया हुआ प्रेशर डाउन हो जाए, या किसी खास दोस्त का ई-मेल उस दिन न मिले तो प्रेशर गायब.

जब आप आनलाइन चैट कर रहे होंगे और आपका बड्डी आपसे पूछेगा कि आप कैसे हैं और उस वक्त अगर आप ज़रा दम लगा रहे होंगे तो चैट में कहेंगे - ठी.....क.....हूं.....ऊं.... वैसे आप भी अंदाजा लगा सकेंगे कि आपका बड्डी कहां से, किस स्थिति से, किस परेशानी से गुजरता हुआ चैट कर रहा है. या आपको भेजा गया ई-मेल किन हालातों और किन परिस्थितियों में लिखा गया होगा. यह भी हो सकता है कि किसी ई-मेल संदेश के, आपकी अपनी परिस्थिति के हिसाब से अनेक अर्थ समझ आएं या फिर परिस्थितिनुसार समझ आएं ही नहीं. वैसे इस मामले में आपको तत्काल ताजातरीन सहायता भी आपकी एक उंगली के इशारे यानी एक माउस क्लिक पर उपलब्ध रहेगी. मसलन नित्यकर्म में आज जो दम लगाया या जो हाइड्रोजन सल्फाइड जैसी गैसें दर्द देते हुए पास हुईं, उनसे निजात कैसे पाया जाए वह इंटरनेट पर गूगल की सर्च साइट पर उसी क्षण उपलब्ध रहेगा. अब यह भी एक अलग बात है कि आप अपनी इच्छा के आवेगों – टैम्पटेशन्स के आगे उन पर अमल कर पाते हैं या नहीं.

अब आपके मित्र के पास यह बहाना नहीं चलेगा कि समय के अभाव से वह आपको ई-मेल नहीं कर पाया क्योंकि तब आप झट से पूछेंगे कि क्या उसने आज अपना नित्यकर्म नहीं निपटाया? अब उच्चाधिकारियों से मिलने का और मिलकर काम करवाने का नया तरीका भी लोगों को अनायास हासिल हो गया है. अब जैसे ही पता चलेगा कि मैडम या साहब बाथरूम में हैं, इसका मतलब ही यह होगा कि वे आई-लू में अपने नित्यकर्म निपटा रहे हैं, और लोग ई-मेल , चैट इत्यादि से उसी समय संपर्क कर अपना जवाब पा सकते हैं. वैसे काम की बात छोड़ दें तो आपका नित्यकर्म खासा खुशगवार भी हो सकता है. आई-लू में अपने नित्यकर्म के दौरान अपने दिली मित्रों से ई-मेल / चैट संदेशों का आदान प्रदान करिए या इंटरनेट पर कोई चुटकुला पढ़िए या फिर इस प्रकाशन का आनलाइन संस्करण पढ़िए और अपना दिन खुशनुमा बनाइए.

raviratlami@mantrafreenet.com

रविशंकर श्रीवास्तव
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,

रतलाम म.प्र. 457001